सहायक प्राध्यापक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम--संगीत

1. पारिभाषिक शब्दावली

नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम-मूर्छना, जाति, राग, ताल, तान, गमक, गांधर्व-गान, मार्ग-देशी, गीति, गान, वर्ण, अलंकार, मेलोडी, हार्मनी, स्वर-सप्तक, स्वर-अन्तराल, संवाद, विवाद, उपस्वर, पाश्चात्य एवं कर्नाटक पारिभाषिक शब्दावली एवं उनका वर्णन, स्वरित (तानपुरा), अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव, उठान, पेशकार, कायदा, रेला, रंग, लग्गी, लड़ी, फर्शबन्दी, ताल, लय, मात्रा, आवर्तन, विभाग, सशब्द क्रिया, निःशब्द क्रिया, ठेका, सरल गत, आदि गत, चक्रदार गत, फरमाइशी गत एवं अतिरिक्त प्रकार की गतें और कायदे, उपांग, भाषांग, गति, कृति, कीर्तन, जातिस्वर, पद, स्वरजाति, रागमालिका, तिल्लाना, न्यास, अंश, प्राण, यति, अनुप्रास, अलापना, नरवल, संगति एवं अतिरिक्त पारिभाषिक शब्दावली, गीतिनाट्य, नृत्य-नाट्य, वैतालिक, वर्षा-मंगल, बसन्तोत्सव, गीतवितान, स्वर-वितान, आकारमात्रिक स्वर-लिपि, मसीतखानी, रजाखानी।

2. प्रयोगात्मक शास्त्र

रागों का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन, रागों का वर्गीकरण ग्राम-राग वर्गीकरण, मेल-राग वर्गीकरण, राग-रागिनी वर्गीकरण, थाट-राग वर्गीकरण एवं रागांग वर्गीकरण, रागों का समय-सिद्धान्त, भारतीय संगीत में मेलोडी एवं हार्मनी का प्रयोग, प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्ध-विकृत स्वरों की स्थापना।

हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित तालों का विस्तृत ज्ञान, ताल के दश प्राणों एवं प्राचीन काल के मार्ग तथा देशी तालों का ज्ञान, तिहाई निर्माण के मूल सिद्धान्त, चक्रदार गत, चक्रदार परन, ताल के दश प्राणों के संदर्भ में हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक तालों का विस्तृत अध्ययन, विभिन्न लयकारियाँ--दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बियाड़ एवं उनके क्रियात्मक प्रयोग सम्बन्धित विस्तृत जानकारी।

3. A. गेय विधाएँ तथा उनका क्रमिक विकास

प्रबन्ध, ध्रुपद, ख्याल, धमार, ठुमरी, टप्पा, तराना, चतुरंग, त्रिवट, वृन्द-गान, वृन्द-वादन, जादली, कृति, तिल्लाना, आलाप, वर्णम् (पद-वर्णम् एवं तान-वर्णम्) पदम, रागम्, तानम्, पल्लवी, गीत, वर्ण, स्वरजाति, कल्पित, संगीत, राग-मालिका, नेरावल, स्वर-कल्पना (मनोधर्म संगीत), तेवरम्, दिव्यप्रबन्धम्, तिरूप्पुगज़।

रवीन्द्र संगीत की मुख्य विधाएँ

'अकारमात्रिक' स्वरलिपि, देवनागरी लिपि का ज्ञान

बंगाल का सांगीतिक इतिहास।

B. घराना और गायकी

हिन्दुस्तानी संगीत में घराना का उद्गम और विकास एवं पारम्परिक हिन्दुस्तानी संगीत की प्रगति तथा संरक्षण में घरानों का सहयोग। घराना पद्धति के गुण-दोष।

कण्ठ, वादन और अवनद्ध के प्रमुख घरानों का अध्ययन। वर्तमान संगीत में घरानों की आवश्यकता तथा सम्भावनाएँ।

कर्नाटक संगीत की गायन और वादन की विभिन्न शैलियाँ और गुरु-शिष्य परम्परा।

4. A. भारतीय संगीत के शास्त्रज्ञों का योगदान एवं उनकी शास्त्रात्मक परम्परा

नारद, भरत, दत्तिल, मतंग, शारंगदेव, नान्यदेव एवं अन्य। लोचन, रामामात्य, पुंडरीक विट्ठल, सोमनाथ, दामोदर मिश्रा, अहोबल, हृदयनारायण देव, व्यंकटमखी, श्रीनिवास, पं० भातखण्डे, पं० डी० वी० पलुस्कर, पं० ओमकारनाथ ठाकुर, के० सी० डी० वृहस्पति, डा० प्रेमलता शर्मा एवं अन्य।

अवनद्य वाद्य सम्बन्धित प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक ग्रंथों—भरत नाटयशास्त्र, संगीत समयसार, राधागोविन्द संगीत सार, मुआदनूल मौसिकी , भारतीय वाद्यों का इतिहास, संगीत शास्त्र, भारतीय संगीत में ताल और रूप, अभिनव ताल मंजरी, भारतीय संगीत वाद्य एव अन्य ग्रंथ। प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक काल के अवनद्य वाद्यों के विशेषज्ञ जैसे, बुदऊ सिंह, भगवान दास, राजा छत्रपति सिंह, अनोखे लाल, अहमद जान थिरकवा, शामता प्रसाद, किशन महाराज एवं अन्य का योगदान।

मध्य एवं आधुनिककाल के कर्नाटक संगीत के प्रमुख शास्त्रज्ञों, रचनाकारों एवं मंचप्रदर्शक कलाकारों का योगदान।

रामामात्य, व्यंकटमखी, त्यागराज, मुत्थुस्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री, गोपाल कृष्ण भारती, प्रोफेसर साम्बमूर्ति, पापानसम् शिवन, बसन्त कुमारी, सुब्बूलक्ष्मी, रामरी, टी० एन० कृष्णन एवं अन्य।

B. संगीत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

प्राचीन, मध्य, एवं आधुनिककाल में हिन्दुस्तानी संगीत (कंठ, वादन तथा अवनद्य), कर्नाटक संगीत, रवीन्द्र संगीत का ऐतिहासिक विकास।

पाश्चात्य शास्त्रज्ञों का भारतीय संगीत में योगदान।

5. A. सौन्दर्यशास्त्र

सौन्दर्यशास्त्र का उद्गम, अभिव्यक्ति और परख; सौन्दर्यशास्त्र के सिद्धान्त एवं भारतीय संगीत से सम्बन्ध।

रस सिद्धान्त एवं भारतीय संगीत में इसका प्रयोग।

हिन्दुस्तानी संगीत (कण्ठ, वादन तथा अवनद्य), कर्नाटक संगीत एवं रवीन्द्र संगीत का सांगीतिक सौन्दर्य शास्त्र तथा रस से सम्बन्ध।

राग-रागिनी चित्रों, राग ध्यान इत्यादि के विशेष सन्दर्भ में ललितकलाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की संदर्भ-ग्रन्थ सूची।

B. वाद्य/नृत्य

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य (गायन, वादन तथा अवनद्य क्षेत्र में), उनकी उत्पत्ति, विकास तथा उनके सुप्रसिद्ध कलाकार। तानपुरा तथा उसके उपस्वरों (Harmonics) का महत्व।

प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत के वाद्यों का वर्गीकरण। रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य।

भारतीय नृत्यों की सामान्य जानकारी : कत्थक, भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी, उड़ीसी, कथाकलि आदि।

6. लोक संगीत

भारतीय संगीत पर लोक संगीत का प्रभाव। लोक संगीत का रागों में शैलीगत परिवर्तन।

रवीन्द्र संगीत, हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की सुप्रसिद्ध लोक धुनें एवं लोक नृत्य यथा : बाउल, भटियाली, लावनी, गरबा, कजरी, चैती, माण्ड, भौंगड़ा, गिद्दा, झूमर, स्वाँग, पण्डवानी, आमार प्राण मानुष आछे प्राण, आमार शोनार बांगला, कीर्तन, सारिमान, राय बेशे, झुमर, करकट्टम्, कवाड़ीअट्टम, विल्लुपोट्टु, मयण्डीमेलम् तथा अन्य प्रसिद्ध लोक विधाएँ।

हिन्दुस्तानी लोक संगीत, कर्नाटक लोक गीत अथवा दक्षिणी लोक संगीत तथा रवीन्द्र संगीत अथवा बंगाल के लोक संगीत में एक दूसरे को प्रभावित करने वाले कारकों एवं तत्वों का विश्लेषण।

भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन : उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल आदि तथा दक्षिणी भारत का लोक संगीत।

7. संगीत शिक्षण एवं शोध तकनीक

गुरु-शिष्य परम्परा, संगीत सम्प्रदाय प्रदर्शिनी, हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत के सन्दर्भ में विद्यालयीन संगीत शिक्षण।

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत शिक्षण के सन्दर्भ में इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों एवं शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली सहायक सामग्री की प्रयोगात्मकता।

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में संगीतात्मक शोध के अन्तर्गत संक्षेपिका, सामग्री संकलन, क्षेत्रीय कार्य, प्रोजेक्ट रिपोर्ट लेखन, संदर्भ ग्रन्थ सूची, संदर्भ सामग्री आदि से सम्बन्धित शोध विधियाँ अथवा शोध प्राविधि।

शास्त्रात्मक तथा मौखिक परम्परा का संगीत में अन्तःसम्बन्ध।

Assistant Professor Written Examination
Syllabus of Music

1. **Technical-Terminology**

Nada, Shruti, Swara, Grama-Moorchana, Jati, Raga, Tala, Tan, Gamak, Gandharva-Gaan, Marga-Deshi, Giti, Gaan, Varna, Alankar, Melody, Harmony, Musical Scales, Musical intervals, Consonance-Dissonance, Harmonics, Western and South Indian terminology and their explanation, Drone, Alpatva-Bahutva, Avirbhav-Tirobhav, Uthan, Peshkar, Kayda, Rela, Rang, Laggi, Ladi, Farshbandi, Tala, Laya, Matra, Avartan, Vibhag, Sashabda Kriya, Nishabda Kriya, Theka, Saral Gat, Adi Gat, Chakradar Gat, Farmaishi Gat and other variety of Gats and Kayadas, Upanga, Bhashanga, Gita, Kriti, Kirtana, Jatiswara, Pada, Swarjati, Ragmalika, Tillana, Nyasa, Ansa-Prana, Yati, Anuprasa, Alapana, Neraval, Sangati and other terms, Gitinatya, Nritya-natya, Baitalik, Varsha-Mangal, Basantotsav, Gita-Bitana, Swara-Bitana, Akarmatrik notation, Masitkhani and Rajakhani Gat.

2. **Applied theory**

Detailed and critical study of Ragas, classification of Ragas, i.e., Grama Raga vargikaran, Mela Raga Vargikaran, Raga-Ragini Vargikaran, Thata Raga Vargikaran, and Raganga Vargikaran, time-theory of Ragas, Application of melody and harmony in Indian Music, Placement of Shuddha and Vikrit Swaras on Shruties in ancient, medieval and modern period.

Detailed knowledge of prevalent talas of Hindustani music, knowledge of tala Dashpranas and Marga and Deshi talas of ancient period, the original principles of making Tihai, Chakradar Gat, Chakradar Paran, comparative study of Hindustani and Karnatak tala system with special reference to ten pranas of tala, detailed study of different layakaris viz, Dugun, Tigun, Chaugun, Ada, Kuaad, Biyaad and method to apply them in compositions.

3. A. **Compositional forms and their Evolution**

Prabandha, Dhruvapada , Khyal, Dhamar, Thumri, Tappa, Tarana, Chaturang, Trivat, Vrindagana, Vrinda Vadan, Jawali, Kriti, Tillana, Alap, Varnam (Pad Varnam and Tana Varnam), Padam, Ragam, Tanam, Pallavi, Gita, Varna, Swarajati, Kalpita, Sangita, Ragamalika, Narvallu, Swara Kalpana (Manodharma Sangeet), Tevaram, Divyaprabandham, Tiruppugazh.

Main forms of Rabindra Sangeet.

Akārmatrik notation system. Knowledge of Devanagari script.

History of music of Bengal.

B. **Gharanas and Gayaki**

Origin and development of Gharanas in Hindustani music and their contribution in preserving and promoting traditional Hindustani classical music. Merits and demerits of Gharana system.

Origin and Development of Gharanas in Instrumental music and Percussion and their contribution in promoting traditional Indian classical music, merits and demerits of Gharana system.

Study of the traditions and specialities of different gharanas in vocal, instrumental and percussion group. Desirability and possibility of gharanas in contemporary music.

Guru shishya parampara and different styles of singing and playing in Karnatak Music.

4. A. **Contribution of Scholars to Indian Music and their textual tradition**

Narad, Bharat, Dattil, Matanga, Sharangadeva, Nanyadeva and others. Lochan, Ramamatya, Pundarik Vitthal, Somnath, Damodar Mishra, Ahobal, Hridaya Narain Deva, Vynkatmakhi, Sriniwas, Pt. Bhatkhande, Pt. V. D. Paluskar, Pt. Omkarnath Thakur, K. C. D. Brahaspati, Dr. Premlata Sharma and others.

Study of ancient, medieval and modern treatises in Percussion instruments like Bharat Natyashastra, Sangeet Samaysar, Radha Govind Sangit Sar, Muadanul Mosiqui, Bhartiya Vadyon Ka Itihas, Sangeet Shastra, Bhartiya Sangeet Mei Taal aur Roop, Abhinav Tala Manjari, Bhartiya Sangeet Vadya, and other treatises. Contribution of various Scholars

to percussion instruments like Kudau Singh, Bhagwan Das, Raja Chatrapati Singh, Anokhe Lal, Ahmadjan thirakwa, Shamta Prasad, Kishan Maharaj and others in ancient, medieval and modern period.

Contribution of prominent Karnatak Scholars, composers and performers and their medieval and modern period like, work such as.Ramamatya, Vyankatmakhi, Tyagraja, Muthhu-Swami Dikshitara, Shyama Sastri, Gopal Krishna Bharati, Prof. Sambhamoorti, Papanasam Shivan, Vasantha Kumari, Subbulakshmi, Ramari, T. N. Krishnan and others.

B. **Historical Perspective of Music**

A study of the historical development of Hindustani music (Vocal, Instrumental, Percussion), Karnatak Music and Rabindra Sangeet in ancient, medieval and modern period,

Contribution of Western Scholars to Indian Music.

5. A. **Aesthetics**

Its origin, expression and appreciation : Principle of aesthetics and its relation to Indian Music.

Rasa theory and its application to Indian Music.

Relationship of Musical aesthetics and Rasa to Hindustani Music (Vocal, Instrumental and Percussion), Karnatak Music and Rabindra Sangeet.

Interrelationship of Fine Arts with special reference to Rag-Ragini Paintings, Dhyan of Ragas and others.

Bibliography of Rabindra Nath Tagore..

B. **Instruments/Dance**

Origin, evolution, structure of various instruments and their well-known exponents of Hindustani (Vocal, Instruments and Percussion), Karnatac Music and Rabindra Sangeet. Importance of Tanpura and its Harmonics.

Classification of Instruments of Hindustani, Karnatac Music in ancient, medieval and modern period. Popular instruments used in Rabindra Sangeet

Elementary knowledge of Indian dances like Kathak, Bharatnatyam, Kuchipudi, Oddissi, Kathakali etc.

6. Folk Music

Influence of folk music on Indian Classical Music. Stylisation of folk melodies into ragas.

Popular folk tunes and folk dances of Hindustani, Karnatak and Rabindra Sangeet, such as Baul, Bhatiyali, Lavani, Garba, Kajri, Chaity, Maand, Bhangra, Gidda, Jhoomar, Swang, Pandawani, Amar-Praner Manush Acchhe Prane, Amar Sonar Bangla, Kirtan, Sarigana, Rai Beshe, Jhumur, Karakattam, Kavadi Attam, Villuppattu, Maiyandi Melam and other prominent folk forms.

Analysis of the elements of Hindustani folk music, Karnatac folk music or South Indian folk music and Rabindra folk Sangeet or folk music of Bengal and the elements regarding their interrelationship.

General study of the folk music of various regions of India like Uttar Pradesh, Rajasthan, Haryana, Punjab, Maharashtra, Bengal and South India.

7. **Music Teaching and Research Technologies**

Guru Shishya Parampara, Sangeet-Sampradaya Pradarsini and the institutional system of music teaching with reference to Hindustani, Karnatak music and Rabindra Sangeet.

Utility of teaching aids like electronic equipments in music education with reference to Hindustani, Karnatak music and Rabindra Sangeet.

The methodologies of music research, preparing synopsis, data collection, field work, writing project reports, finding bibliography, reference material etc. with reference to Hindustani, Karnatak music and Rabindra Sangeet.

Study of interrelation between textual and oral tradition.